(घ) **विलोमशब्दाः-**

दुर्बुद्धिः - सुबुद्धिः
गर्हितः - प्रशंसितः
प्रवृत्तः - निवृत्तः
अभ्यासः - अनभ्यासः
सत्यम् - असत्यम्

(ङ) **आत्मगतम्** - नाटकों में प्रयुक्त यह एक पारिभाषिक शब्द है। जब नट या अभिनेता रंगमञ्च पर अपने कथन को दूसरों को सुनाना नहीं चाहता, मन में ही सोचता है तब उसके कथन को 'आत्मगतम्' कहा जाता है।

(च) **प्रकाशम्** - जब नट या अभिनेता के संवाद रंगमञ्च पर दर्शकों के सामने प्रकट किये जाते हैं, तब उन संवादों को 'प्रकाशम्' शब्द से सूचित किया जाता है।

(छ) **अतिरामता** - राम से आगे बढ़ जाने की स्थिति को 'अतिरामता' कहा गया है-रामम् अतिक्रान्तः = अतिरामः, तस्य भावः = **अतिरामता**। राम ने शिलाओं से समुद्र में सेतु का निर्माण किया था। विप्र-रूपधारी इन्द्र को सिकता-कणों से सेतु बनाते देख तपोदत्त उनका उपहास करते हुए कहता है कि तुम राम से आगे बढ़ जाना चाहते हो।

**निम्नलिखित कहावतों को पाठ में आए हुए संस्कृत वाक्यांश में पहचानिये-**

(*i*) सुबह का भूला शाम को घर लौट आये, तो भूला नहीं कहलाता है।
(*ii*) मेरी आँखें खुल गईं।

(ज) **आञ्जनेयम्** - अञ्जना के पुत्र होने के कारण हनुमान् को आञ्जनेय कहा जाता है। हनुमान् उछलकर कहीं भी जाने में समर्थ थे। इसलिए इन्द्र के यह कहने पर कि मैं सीढ़ी से जाने में विश्वास नहीं करता हूँ अपितु उछलकर ही जाने में समर्थ हूँ, तपोदत्त फिर से उपहास करते हुए कहता है कि पहले आपने पुल निर्माण में राम को लाँघ लिया और अब उछलने में हनुमान् को भी लाँघने की इच्छा कर रहे हैं।

(झ) **अक्षरज्ञानस्य माहात्म्यम्-**

(*i*) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
(*ii*) किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।
(*iii*) यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयते।
तस्य दिवाकरकिरणैः नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धिः।।

© NCERT not to be republished

0961CH10

अष्टमः पाठः

# जटायोः शौर्यम्

प्रस्तुतोऽयं पाठ्यांशः महर्षिवाल्मीकिविरचितस्य **"रामायणम्"** इत्यस्य ग्रन्थस्य अरण्यकाण्डात् समुद्धृतोऽस्ति। अत्र जटायु-रावणयोः युद्धस्य वर्णनम् अस्ति। पक्षिराजोजटायुः पञ्चवटीकानने विलपन्त्याः सीतायाः करुणक्रन्दनं श्रुत्वा तत्र गच्छति। सः सीतापहरणे निरतं रावणं तस्मात् निन्द्यकर्मणः निवृत्त्यर्थं प्रबोधयति । परञ्च अपरिवर्तितमतिः रावणः तमेव अपसारयति। ततः पक्षिराजः तुण्डेन पादाभ्याञ्च प्रहरति, स्वनखैः रावणस्य गात्राणि विदारयति, एवञ्च बहुविधा-क्रमणेन रावणः भग्नधन्वा हतसारथिः हताश्वः व्रणी विरथश्च सञ्जातः। खगाधिपस्य पुनः पुनः अतिशयप्रहारैः व्रणी महाबली रावणः मूर्च्छितो भवति।

सा तदा करुणा वाचो विलपन्ती सुदुःखिता।
वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्शायतलोचना ।।1।।

जटायो पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत्।
अनेन राक्षसेन्द्रेणाकरुणं पापकर्मणा ।।2।।

तं शब्दमवसुप्तस्तु जटायुरथ शुश्रुवे।
निरीक्ष्य रावणं क्षिप्रं वैदेहीं च ददर्श सः ।।3।।

ततः पर्वतशृङ्गाभस्तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।
वनस्पतिगतः श्रीमान्व्याजहार शुभां गिरम् ।।4।।

निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।
न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ।।5।।

© NCERT not to be republished

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ।।6।।

तस्य तीक्ष्णनखाभ्यां तु चरणाभ्यां महाबलः।
चकार बहुधा गात्रे व्रणान् पतगसत्तमः ।।7।।

ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम्।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्जा पतगेश्वरः ।।8।।

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
तलेनाभिजघानाशु जटायुं क्रोधमूर्च्छितः ।।9।।

जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिपः।
वामबाहून् दश तदा व्यपाहरदरिन्दमः ।।10।।

## शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| **ह्रियमाणाम्** | नीयमानाम् | ले जाई जाती/अपहरण की जाती हुई | Being kidnapped |
| **राक्षसेन्द्रेण** | दानवपतिना | राक्षसों के राजा द्वारा | By the king of demons |
| **परदाराभिमर्शनात्** | परस्त्रीस्पर्शात् | पराई स्त्री के स्पर्श से | From touching the other's wife |
| **विगर्हयेत्** | निन्द्यात् | निन्दा करनी चाहिए | (He/she) may criticize |
| **धन्वी** | धनुर्धरः | धनुर्धर | Archer |
| **कवची** | कवचधारी | कवच धारण किए हुए | Armed |
| **शरी** | बाणधरः | बाण को लिए हुए | Holding arrows |
| **व्याजहार** | अकथयत् | कहा | (He/she) said |
| **निवर्तय** | वारणं कुरु | मना करो, रोको | (you) stop |
| **व्यपाहरत्** | उत्खातवान् | उखाड़ दिया | Removed |
| **व्रणान्** | प्रहारजनितस्फोटान् | प्रहार (चोट) से होने वाले घावों को | Wounds |
| **बभञ्ज** | भग्नं कृतवान् | तोड़ दिया | Broke |
| **पतगेश्वरः** | जटायुः | जटायु (पक्षिराज) | The king of birds |
| **भग्नधन्वा** | भग्नः धनुः यस्य सः | टूटे हुए धनुष वाला | Holding broken arch |
| **हताश्वः** | हताः अश्वाः यस्य सः | मारे गए घोड़ों वाला | Whose horses are dead |
| **अभिजघान** | आक्रान्तवान् | हमला किया | Attacked |
| **आशु** | शीघ्रम् | शीघ्र ही | Quickly |
| **तुण्डेन** | मुखेन, चञ्च्वा | चोंच के द्वारा | By beak |
| **खगाधिपः** | पक्षिराजः | पक्षियों का राजा | King of birds |
| **अरिन्दमः** | शत्रुदमनः, शत्रुनाशकः | शत्रुओं को नष्ट करने वाला | Destroyer of enemies |

© NCERT not to be republished

**अन्वयः**

तदा सुदु:खिता करुणाः वाचः विलपन्ती आयतलोचना सा (सीता) वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्श ।।1।।

(हे) आर्य जटायो! अनेन पापकर्मणा राक्षसेन्द्रेण अनाथवत् अकरुणं ह्रियमाणां मां पश्य ।।2।।

अथ सः अवसुप्तः जटायुः तु तं शब्दं शुश्रुवे, क्षिप्तं रावणं निरीक्ष्य वैदेहीं च ददर्श ।।3।।

ततः वनस्पतिगतः पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः श्रीमान् खगोत्तमः शुभां गिरं व्याजहार ।।4।।

(हे रावण!) परदाराभिमर्शनात् नीचां मतिं निवर्तय, धीरः तत् न समाचरेत्, यत् अस्य परः विगर्हयेत् ।।5।।

अहं (जटायुः) वृद्धः, त्वं (तु) सरथः, कवची, युवा, अपि च मे (जीविते सतिः) वैदेहीम् आदाय कुशली न गमिष्यसि ।।6।।

महाबलः पतगसत्तमः (जटायुः) तु तीक्ष्णनखाभ्यां चरणाभ्यां तस्य गात्रे बहुधा व्रणान् चकार ।।7।।

ततः महातेजाः पतगोत्तमः (जटायुः) अस्य (रावणस्य) मुक्तामणिविभूषितं सशरं चापं चरणाभ्यां बभञ्ज।।8।।

सः भग्नधन्वा हताश्वः हतसारथिः विरथः क्रोधमूर्च्छितः (रावणः) आशु तलेन जटायुम् अभिजघान ।।9।।

अरिन्दमः खगाधिपः जटायुः तम् अतिक्रम्य अस्य दश वामबाहून् व्यपाहरत् ।।110।।

## अभ्यासः

**1. एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) आयतलोचना का अस्ति?
(ख) सा कं ददर्श?
(ग) खगोत्तमः कीदृशीं गिरं व्याजहार?
(घ) जटायुः काभ्यां रावणस्य गात्रे व्रणं चकार?
(ङ) अरिन्दमः खगाधिपः कति बाहून् व्यपाहरत्?

**2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) "जटायो! पश्य" इति का वदति?
(ख) जटायुः रावणं किं कथयति?
(ग) क्रोधवशात् रावणः किं कर्तुम् उद्यतः अभवत्?
(घ) पतगेश्वरः रावणस्य कीदृशं चापं सशरं बभञ्ज?
(ङ) जटायुः केन वामबाहुं दंशति?

**3. उदाहरणमनुसृत्य णिनि-प्रत्ययप्रयोगं कृत्वा पदानि रचयत-**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यथा-** | गुण | + | णिनि | - | गुणिन् (गुणी) |
| | दान | + | णिनि | - | दानिन् (दानी) |
| (क) | कवच | + | णिनि | - | .............. |
| (ख) | शर | + | णिनि | - | .............. |
| (ग) | कुशल | + | णिनि | - | .............. |

(घ) धन + णिनि – ..............
(ङ) दण्ड + णिनि – ..............

**(अ) रावणस्य जटायोश्च विशेषणानि सम्मिलितरूपेण लिखितानि तानि पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत–**

युवा, सशरः, वृद्धः, हताश्वः, महाबलः, पतगसत्तमः, भग्नधन्वा, महागृध्रः, खगाधिपः, क्रोधमूर्च्छितः, पतगेश्वरः, सरथः, कवची, शरी

**यथा–**

| **रावणः** | **जटायुः** |
|---|---|
| युवा | वृद्धः |
| ...................... | ...................... |
| ...................... | ...................... |
| ...................... | ...................... |
| ...................... | ...................... |
| ...................... | ...................... |
| ...................... | ...................... |

**4. 'क' स्तम्भे लिखितानां पदानां पर्यायाः 'ख' स्तम्भे लिखिताः। तान् यथासमक्षं योजयत–**

| **क** | **ख** |
|---|---|
| कवची | अपतत् |
| आशु | पक्षिश्रेष्ठः |
| विरथः | पृथिव्याम् |
| पपात | कवचधारी |
| भुवि | शीघ्रम् |
| पतगसत्तमः | रथविहीनः |

**5. अधोलिखितानां पदानां/विलोमपदानि मञ्जूषायां दत्तेषु पदेषु चित्वा यथासमक्षं लिखत–**

मन्दम् पुण्यकर्मणा हसन्ती अनार्य अनतिक्रम्य
देवेन्द्रेण प्रशंसेत् दक्षिणेन युवा

| **पदानि** | **विलोमशब्दाः** |
|---|---|
| (क) विलपन्ती | .................. |
| (ख) आर्य | .................. |

(ग) राक्षसेन्द्रेण ..................
(घ) पापकर्मणा ..................
(ङ) क्षिप्रम् ..................
(च) विगर्हयेत् ..................
(छ) वृद्धः ..................
(ज) वामेन ..................
(झ) अतिक्रम्य ..................

**6. (अ) अधोलिखितानि विशेषणपदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत-**

(क) शुभाम् .................. (ख) खगाधिपः ..................
(ग) हतसारथिः .................. (घ) वामेन ..................
(ङ) कवची ..................

**(आ) उदाहरणमनुसृत्य समस्तं पदं रचयत-**

**यथा**- त्रयाणां लोकानां समाहारः - त्रिलोकी
(क) पञ्चानां वटानां समाहारः - ..........................
(ख) सप्तानां पदानां समाहारः - ..........................
(ग) अष्टानां भुजानां समाहारः - ..........................
(घ) चतुर्णां मुखानां समाहारः - ..........................

## योग्यताविस्तारः

यह पाठ्यांश आदिकवि वाल्मीकि-प्रणीत रामायणम् के अरण्यकाण्ड से उद्धृत किया गया है जिसमें जटायु और रावण के युद्ध का वर्णन है। पंचवटी कानन में सीता का करुण विलाप सुनकर पक्षिश्रेष्ठ जटायु उनकी रक्षा के लिए दौड़े। वे महाबली जटायु अपने तीखे नखों तथा पञ्जों से रावण के शरीर में अनेक घाव कर देते हैं, जिसके कारण रावण विरथ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। कुछ ही क्षणों बाद क्रोधांध रावण जटायु पर प्राणघातक प्रहार करता है परंतु पक्षिश्रेष्ठ जटायु उससे अपना बचाव कर उस पर चञ्चु-प्रहार करते हैं, उसके बायें भाग की दशों भुजाओं को क्षत-विक्षत कर देते हैं।

**(क) कवि परिचय**

महर्षि वाल्मीकि आदिकाव्य रामायण के रचयिता हैं। कहा जाता है कि वाल्मीकि का हृदय, एक व्याध द्वारा क्रीडारत क्रौञ्चयुगल (पक्षियों के जोड़े) में से एक के मार दिये जाने पर उसकी सहचरी के विलाप को सुनकर द्रवित हो गया तथा उनके मुख से शाप के रूप में जो वाणी निकली वह श्लोक के रूप में थी। वही श्लोक लौकिक संस्कृत का आदिश्लोक माना जाता है-

© NCERT not to be republished